

अनुभव और स्मृति से उत्पन्न होता है 3. कल्पना 4. भक्ति 5. श्रद्धा 6. पुष्प अथवा सुगंधित द्रव्यों से सुवासित करने का कार्य 7. मन को अच्छला लगना, भाना आयु. औषध आदि अथवा उसके चूर्ण को किसी द्रव पदार्थ से बार बार मिलाकर घोटने की प्रक्रिया।

भावनाट्य पुं. (तत्.) काव्य. नाटक का एक विशिष्ट प्रकार, इस नृत्य द्वारा कायिक अभिनय से भावों की लालित्य पूर्ण अभिव्यक्ति की जाती है, नृत्य का संगीत-सहयोग भी लावण्यपूर्ण होता है, अंग्रेजी में इस को 'मेलोड्रामा' कहते हैं।

भाव प्रवण वि. (तत्.) स्थिति अथवा दृश्य को देख कर तुरंत आत्मसात करने वाला व्यक्ति, भावुक।

भावभक्ति स्त्री. (तत्.) ज्ञान से मुक्त, मात्र भाव के आधार पर की गई भक्ति, निमग्न होकर की गई भक्ति, भक्ति में आनंद की स्थिति।

भावलिपि स्त्री. (तत्.) संकल्पनाओं, विचारों, वस्तुओं तथा विविध प्रतीकों के आधार पर निर्मित लिपि, अक्षरों पर आधारित लिपि से पूर्व की लिपि टि. चीनी भाषा में अब भी कुछ अध्ययन एवं अध्यापन भावलिपि पर आधारित है, इस का दूसरा नाम चित्रलिपि भी है।

भाववाचक वि. (तत्.) व्या. भाव को व्यक्त करने वाला (शब्द), पदार्थ के गुण आदि को व्यक्त करने वाला (शब्द) जैसे- प्रसन्नता, विषाद आदि टि. भाववाचक संज्ञा, ऐसी संज्ञा जो भाव के आधार पर ही परिभाषित हो सके, कुछ भाववाचक संज्ञाएँ विशेषणों से व्युत्पन्न होती हैं जैसे- 'खुश' से 'खुशी', 'ऊँचा' से 'ऊँचाई' आदि।

भाववाच्य पुं. (तत्.) भाषा की वाच्य प्रक्रिया का एक भेद, अन्य दो हैं कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य, वाच्य वाक्य से ही परिभाषित होता है, शब्द से नहीं, अकर्ममक क्रिया यदि कर्तृवाच्य न हो तो भाववाच्य हो सकती है जैसे- 'बच्चे से सोया नहीं जाता', 'सोना' अकर्मक क्रिया है, इसलिए भाववाच्य में प्रकट हुई है।

भाव विरेचन पुं. (तत्.) 1. मन के भावों की अनियंत्रित अभिव्यक्ति 2. असंसीदीय शब्दों का प्रयोग 3. दमित भावनाओं के व्यक्त करने की प्रक्रिया।

भावशबलता स्त्री. (तत्.) वह अवस्था, जब एक साथ अनेक भाव उत्पन्न हों और उन का मिश्रण भी हो जाए।

भावसंधि स्त्री. (तत्.) मन में दो या दो से अधिक भावों की एक साथ उत्पत्ति।

भावहरण पुं. (तत्.) किसी के भावों को अपने भाव बनाकर प्रकट करना, वर्तमान में इसको 'साहित्यिक' चोरी की संज्ञा भी दी जाती है।

भावाभास पुं. (तत्.) भाव की प्रतीति मात्र, अनुचित रूप में प्रवृत्त हुआ भाव, बनावटी भाव काव्य. 'इस' में वर्णित या अभिव्यक्त एक अवधारण जिसके अनुसार कई बार एकाधिक भावों का आभास होता है।

भावार्थ पुं. (तत्.) आशय, काव्य की अभिव्यंजना टि. यह शब्दार्थ से भिन्न होती है, काव्य का तात्पर्य ही उस का भावार्थ कहलाता है।

भावालंकार पुं. (तत्.) काव्य. एक प्रकार का अलंकार, अर्थालंकारों में इस प्रकार का वर्णन जहाँ, पूर्व घटित घटना के सभी संकेत उपस्थित हों ऐसा होते हुए भी पूर्व भाव का उदय नहीं होता, किसी अन्य भाव का उदय होता है।

भावाश्रित वि. (तत्.) मन के भावों पर आश्रित, जैसे चित्र कला, शिल्प कला अथवा अन्य ऐसी ही कलाएँ, जिनमें शब्दों की कोई भूमिका नहीं होती।

भावित वि. (तत्.) 1. सोचा हुआ, जाना हुआ 2. प्रमाणित 3. भेंट किया हुआ 4. समर्पित 5. जिसमें किसी रस आदि की भावना की गई हो आयु. 1. शुद्ध किया हुआ, शोधित 2. जिसमें किसी अन्य रस का पुट दिया गया हो।

भावी वि. (तत्.) 1. होनहार, आगे होने वाला 2. भविष्य में संपन्न होने वाला स्त्री. निश्चित रूप से घटित होने वाली बात, जो टाली नहीं जाती।